शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मनुजत्व की प्रासंगिकता और 'रश्मिरथी'

डॉ. आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार, भारत

शोध संक्षेप

मनुजत्व की पहचान कराने वाली कृति 'रश्मिरथी' रामधारी सिंह दिनकर की अन्यतम रचना है। अपने वंश गौरव और माँ-पिता के नाम से वंचित कर्ण का जीवन-चरित 'रश्मिरथी' के माध्यम से ऐसे मनुष्य के रूप में सामने आता है जो राजकुल की कन्या से जन्म लेने के बाद भी आजीवन लांछन, अपमान और तिरस्कार सहते हुए मनुष्यत्व की उच्च भाव-भूमि की प्रतिष्ठा कायम करता है। वह वीर, साहसी, पराक्रमी तो है ही, वह एक सच्चा मित्र, व्रती, तपस्वी, दानी और स्वाभिमानी व्यक्ति भी है। आज के समय में कर्ण की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में यही विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

अपने जीवन में व्यक्ति ऐसे मित्र की कल्पना करता है, जो संकट के समय उसके साथ खड़ा हो, जब वह हतोत्साहित हो तो उसे हौसला प्रदान करे। अनेक बार व्यक्ति को मित्रों से धोखा खाना पड़ता है। तुलसीदास जी ने लिखा ही है कि मित्र की पहचान विपत्ति के समय होती है। मित्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के उदाहरण इतिहास में बहुत कम हैं लेकिन जिन्होंने मित्रता के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया, उनके चरित्र का आज भी स्मरण किया जाता है। ऐसी मित्रता मनुष्यता के उच्च मापदंड स्थापित करती है। ऐसे चरित नायकों में महाभारत का पात्र कर्ण भी है। कर्ण ने जीवनभर उपेक्षा सही। इस पात्र के चरित्र को उभार कर श्रेष्ठ नायकों के पंक्ति में खड़ा करने के लिए रामधारी सिंह दिनकर ने 'रश्मीरथी' खंड काव्य की रचना की। इस खंड काव्य में दिनकर जी ने कर्ण को उच्च भावभूमि पर स्थापित कर दिया। मनुष्य और मनुष्यत्व की रक्षा के लिए कर्ण ने स्वयं के जीवन को दांव पर लगा दिया। जब भी कर्ण के सामने विजय उपस्थित हुई तब नियती ने उसे पराजय में तब्दील कर दिया। उसे अपनाने में कर्ण ने तनिक भी संकोच नहीं किया। कर्ण का जीवन चरित आज के घोर स्वार्थपूर्ण समाज में आशा की किरण है। 'रश्मिरथी' की भूमिका में दिनकर लिखते हैं कि - "यह युग दलितों और उपेक्षितों के उद्धार का युग है। कर्ण-चरित के उद्धार की चिन्ता इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज में मानवीय गुणों की पहचान बढ़ने वाली है।"

'रश्मीरथी' में मनुजत्व

कर्ण महाभारत का शक्तिशाली योद्धा है। उसका जन्म एक अविवाहित राजकन्या कुंती के गर्भ से हुआ है। परन्तु लोकलाज और राजवंश की मर्यादा की परवाह करते हुए कुंती अपने नवजात शिशु को एक मंजूषा में बंद करके नदी में बहा देती है। सूत नामक सारथी को यह मंजूषा प्राप्त होता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है। सूत और उसकी पत्नी राधा, जो निःसंतान हैं - ईश्वर का उपहार मानकर उसका पालन-पोषण करते हैं। इस प्रकार कर्ण महाभारत में सूत-पुत्र और राधेय के नाम से भी जाना जाता है। 'रश्मिरथी' के प्रथम सर्ग में दिनकर की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

"जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी
सूतवंश में पला, चखा भी नहीं जननी का क्षीर
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्भुत वीर।

आधुनिक समाज में उपस्थित जाति-पाँति की समस्या से महाभारतकालीन समाज भी त्रस्त था। इसका विवरण 'रश्मिरथी' के माध्यम से प्रथम सर्ग में ही तब मिलता है जब सूत-पुत्र कर्ण कौरवों और पाण्डवों के बीच होने जा रहे शस्त्र-शास्त्र परीक्षा के दरम्यान उपस्थित होकर धनुर्धारी अर्जुन को ललकारता है। परन्तु कृपाचार्य कर्ण को अपमानित करते हुए कहते हैं कि अर्जुन सिर्फ राजपुत्र के साथ ही लड़ सकता है, सूत-पुत्र के साथ नहीं। इतना ही नहीं, वे उससे उसकी वास्तविक पहचान बतलाने को कहते हैं, जिससे आहत होकर कर्ण कहता है कि मेरी पहचान मेरी जाति से नहीं, मेरी भुजाओं में बल से परखो-

"पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से
रवि-समान दीपित ललाट से और कवच-कुण्डल से,
पढ़ो उसे जो झलक रहा है मुझमें तेज प्रकाश,
मेरे रोम-रोम में अंकित है मोर इतिहास।"

x x x x x

"जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाषंड
मैं क्या जानूँ जाति ? जाति है ये मेरे भुजदण्ड।"

कुल, जाति और वंश के नाम पर चलने वाले मिथ्याडम्बर पर दिनकर चोट करते हुए लिखते हैं कि -

"बड़े वंश से क्या होता है, खोटे हों यदि काम ?
नर का गुण उज्ज्वल चरित है, नहीं वंश-धन-धान।"

दरअसल 'रश्मिरथी' भौतिकवादी जीवन की घोर निंदा करता है, क्योंकि आधुनिकता के नाम पर विश्वव्यापी 'विकास' का मॉडल मनुष्य से मनुष्य होने की संवेदना को शनैःशनैः क्षीण करता जाता है। मनुष्य की संवेदना मशीनों के बीच काम करते-करते मशीनीकरण की गिरफ़्त में है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने मूल्यों का ह्रास तो किया ही है, प्रकृति के साथ भी दुर्व्यवहार किया है। इसलिए कर्ण सत्ता और समृद्धि को मनुजत्व के लिए विष मानता है। दिनकर के शब्दों में -

"होकर समृद्धि सुख के अधीन, मानव होता नित तपः क्षीण,
सत्ता किरीट, मणिमय आसन, करते मनुष्य का तेज-हरण,
नर विभव-हेतु ललचाता है, पर वही मनुष्य को खाता है।"

गुरू-घंटालों का जैसा जमघट आज के समय में मौजूद है उसका शुरूआती स्वरूप महाभारतकाल में दिखने लगा था। एकलव्य का अंगूठा कटवाना, गुरूदक्षिणा के रूप में द्रोण का छल-छद्म था। पांडवपुत्र अर्जुन को विश्वव्यापी सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी सिद्ध करने के लिए द्रोण ने एकलव्य का अंगूठा कटवा लिया। यही नहीं, द्रोणाचार्य की शिक्षा सूत्र-पुत्र कर्ण के लिए निषिद्ध थी। ऐसे में अपनी जाति की पहचान छिपाकर कर्ण परशुराम की शरण में शस्त्र-विद्या के लिए जाता है। परशुराम

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कर्ण का तेजोदीप्त शरीर और उसके कवच-कुंडल देखकर उसे ब्राह्मण कुमार समझ बैठते हैं और शस्त्र विद्या के लिए हामी भर देते हैं। एक दिन परशुराम, कर्ण की जांघ पर सिर रखकर सो रहे हैं, तभी एक कीड़ा आकर कर्ण को काटने लगता है। गुरुभक्त कर्ण यह सोचकर उस कीड़े को नहीं भगाता कि गुरू की कच्ची नींद टूट जाएगी और वह कीड़े के दर्द को सहते हुए अपनी जंघा से खून बहने देता है। गुरू परशुराम को इसका अहसास होते ही वस्तुस्थिति समझने में देर नहीं लगी और वे समझ जाते हैं कि ब्राह्मण में ऐसा धैर्य कहाँ, यह जरूर क्षत्रिय कुल का युवक है। परशुराम क्रुद्ध होकर कर्ण को शाप देते हैं कि ब्रह्मास्त्र की विद्या तू अंतिम समय में भूल जाएगा -

"सिखलाया ब्रह्मास्त्र तुझे जो, काम नहीं वह आयेगा,
है यह मेरा शाप, समय पर उसे भूल तू जायेगा।'

गुरू परशुराम का यही क्रोध अंत में कर्ण के जीवन के लिए काल बन जाता है। फिर भी कर्ण आजीवन अपने मार्ग से विचलित नहीं होता।

कर्ण अपने समय का महादानी भी था। जन्म से मिले कवच-कुंडल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे- ऐसी चिंता पांडवों और भगवान श्रीकृष्ण को थी। इसलिए श्रीकृष्ण षड्यंत्रपूर्वक अर्जुन के देवपिता इन्द्र से कहते हैं कि किसी भी तरह कर्ण के शरीर से कवच-कुंडल अलग कर दो। तत्पश्चात देवों का अधिपति इन्द्र याचक बनकर कर्ण के पास प्रातःकाल जाते हैं। कर्ण नियमानुसार सूर्य की पूजा करके याचकों को दान सहर्ष देता था। भिक्षुक ब्राह्मण का वेश धारण करके आए इन्द्र को कवच-कुंडल उतारकर कर्ण दे देते हैं, यह जानते हुए भी कि वे महाभारत युद्ध में अपनी विजय और अपने जीवन का दान कर रहे हैं।

इन्द्र अपनी लज्जा छिपाने के लिए कर्ण को एकघ्नी नामक अस्त्र देते हैं, यह कहते हुए कि जिस पर भी एकघ्नी चलाया जाएगा, वह निश्चित ही मारा जाएगा। इन्द्र भी कर्ण की इस प्रकार की दानशीलता की प्रशंसा में कह उठते हैं -

"दानवीर! जय हो महिमा का गान सभी जन गायें,
देव और नर, दोनों ही, तेरा चरित्र अपनाएँ।"

देवराज इन्द्र के सामने कर्ण अपने बाहुबल से धर्म की रक्षा करते हुए मर मिटने की बात करते हुए कहते हैं कि -

"देवराज! छल, छद्म, स्वार्थ, कुछ भी न साथ लाया हूँ,
मैं केवल आदर्श, एक उनका बनने आया हूँ।'

सत्य के प्रति गहरी आस्था, न्याय के प्रति विश्वास और हृदय में साहस लिए कर्ण इन्द्र से पुनः कहता है कि -

"हार-जीत क्या चीज़ ? वीरता की पहचान समर है।
सच्चाई पर कभी हार कर भी न हारता नर है।"

इसी प्रकार, कृष्ण से संवाद करते हुए कर्ण, कृष्ण द्वारा पांडवों के पक्ष में मिलने और राज्य सिंहासन पाने के लोभ देने पर भी अडिग रहता है और बुरे वक्त में काम आए दुर्योधन के प्रति उसकी दोस्ती के प्रति अपनी निष्ठा जाहिर करता है।

"सम्राट बनेंगे धर्मराज, या पायेगा कुरूराज ताज,
लड़ना भर मेरा काम रहा, दुर्योधन का संग्राम रहा।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मुझको न कहीं कुछ पाना है, केवल ऋण मात्र चुकाना है।"

दरअसल कृष्ण, समाज की नीतियों का वास्ता देकर कर्ण को पाण्डव पक्ष में करने का प्रयास करते हैं परन्तु असफल रहते हैं। जबकि कर्ण मित्र धर्म की स्थापना करता हुआ मित्रद्रोह को मानव का पातक बताता है।

इसलिए अपने मित्र, अपने वचन, अपने राष्ट्र के लिए अपना प्राण न्यौछावर करने वाले कर्ण का चरित्र भारतीय युवकों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करनेवाला है। मनसा-वाचा-कर्मणा कर्ण का चरित्र एकमेव है। कर्ण क्रांतिकारी है जो लीक से हटकर सोचता है। स्वयं कवि दिनकर ने राष्ट्र-प्रेम की भावना को व्यक्त करते हुए लिखा है कि - "राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं जन्मी, उसने बाहर से आकर मुझे आक्रांत किया है।"

मानव के कतिपय गुण दान, दया, धर्म पालन, मैत्री, वीरता आदि कर्ण के व्यक्तित्व का आधार रहे हैं। दिनकर कर्ण की कथा के माध्यम से उक्त गुणों की स्थापना पर बल देते है। जीवन से भयभीत, अभावों से दुखी व व्यवस्था से नाराज व त्रस्त आज का मानव स्वार्थी, लोभी व दंभी हो गया है। जबकि भाग्य और नियति के स्थान पर अपने कर्मबल और अपने पुरूषार्थ से जीवन-समर में कूदने वाले कर्ण का व्यक्तित्व प्रासंगिक है और मनुजत्व की रक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

जब कर्ण को समझाने व मनाने उसकी माँ कुन्ती आती है तब भी वह अपनी माँ को सर्वथा निराश नहीं करता बल्कि कहता है कि तुम्हारे पाँच पुत्र हमेशा बने रहेंगे। परन्तु अपने उपेक्षित जीवन के दुःखों से संत्रस्त कर्ण कुंती से कहते हैं कि -

"जानें, सहसा तुम सबने क्या पाया है,
जो मुझ पर इतना प्रेम उमड़ आया है
अब तक न स्नेह से कभी किसी ने हेरा,
सौभाग्य किन्तु, जग पड़ा अचानक मेरा।"

इसी प्रकार, युद्ध के मैदान में अश्वसेन नामक सर्प की सहायता को अस्वीकार करते हुए कर्ण कहते हैं कि-

"अर्जुन है मेरा शत्रु, किन्तु वह सर्प नहीं, नर ही तो है,
संघर्ष सनातन नहीं, शत्रुता इस जीवन भर ही तो है।"

वस्तुतः अश्वसेन से संवाद में कर्ण मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय देते हुए मानव-मानव की लड़ाई में सर्प की सहायता लेने से इंकार कर देता है, जबकि वह जानता है कि इस सहायता से अर्जुन मारा जा सकता है और उसकी विजय निश्चित होती।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर 'रश्मिरथी' मानव-धर्म का सार है। तप, त्याग, करूणा, वीरता, दान, धर्म और मित्रता का भाव इस लम्बी कविता के माध्यम से प्रकट हुआ है। गुरू में निष्ठा, मित्र-प्रेम, माँ के प्रति संवेदना और शत्रुओं के प्रति पुरूषार्थ भावना का ऐसा उदाहरण कर्ण के व्यक्तित्व को आधुनिक समय में और भी अधिक प्रासंगिक बनाता है। यही नहीं, चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'रश्मिरथी' उन्नत एवं उच्च कोटि की रचना है। दिनकर ने 'रश्मिरथी' के माध्यम से कर्ण के चरित्र को मनुजत्व के धरातल पर खड़ा किया है। आदर्श मित्र, अनन्य गुरूभक्त, परम धार्मिक,

तेजस्वी, कुशल धनुर्धर, यज्ञी, निष्कपट, सत्यवादी, व्रती, पतितों का उद्धारक, नारियों का संरक्षक, दयाशील, दानशील आदि अनेक गुणों से विभूषित कर्ण महाभारत के सर्वश्रेष्ठ किरदारों में से एक है। यहाँ कर्ण का चरित्र श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन तथा परशुराम से भी अधिक उज्ज्वल तथा श्रेष्ठ अंकित हुआ है। कर्ण के व्यक्तित्व को अत्यधिक गरिमा एवं महिमा 'रश्मिरथी' के माध्यम से ही प्राप्त हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का निरूपण, डॉ. देवायत एम. सोलंकी, शांति प्रकाशन, रोहतक, हरियाणा, प्रकाशन-2013

2 दिनकर रचनावली - रामधारी सिंह दिनकर सं.- नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार भाग-5,7, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2011

3 दिनकर-एक शताब्दी, डॉ. (श्रीमती) सोमवती शर्मा, डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010

4 दिनकर, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सं.- जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1977

5 दिनकर, संपादक - सावित्री सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1970

6 दिनकर : वैचारिक क्रांति के परिवेश में वाणी प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण-1976